
राज कॉमिक्स
संख्या 1066
दुष्टयंती
बांकेलाल
RAJ COMICS
राज कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA

हास्य सम्राट बांकेलाल का रोमांचक कॉमिक

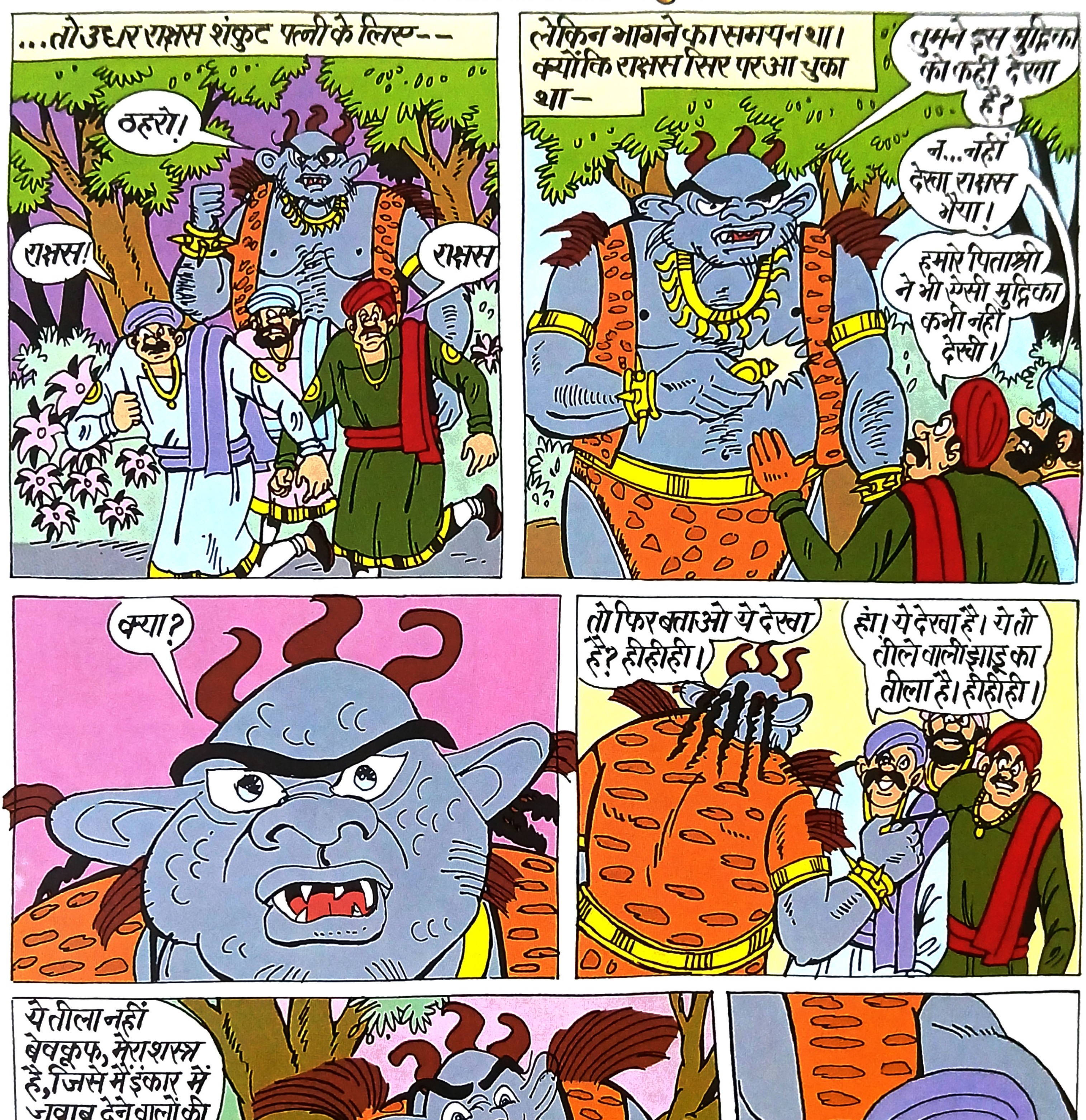
दुष्टयंती

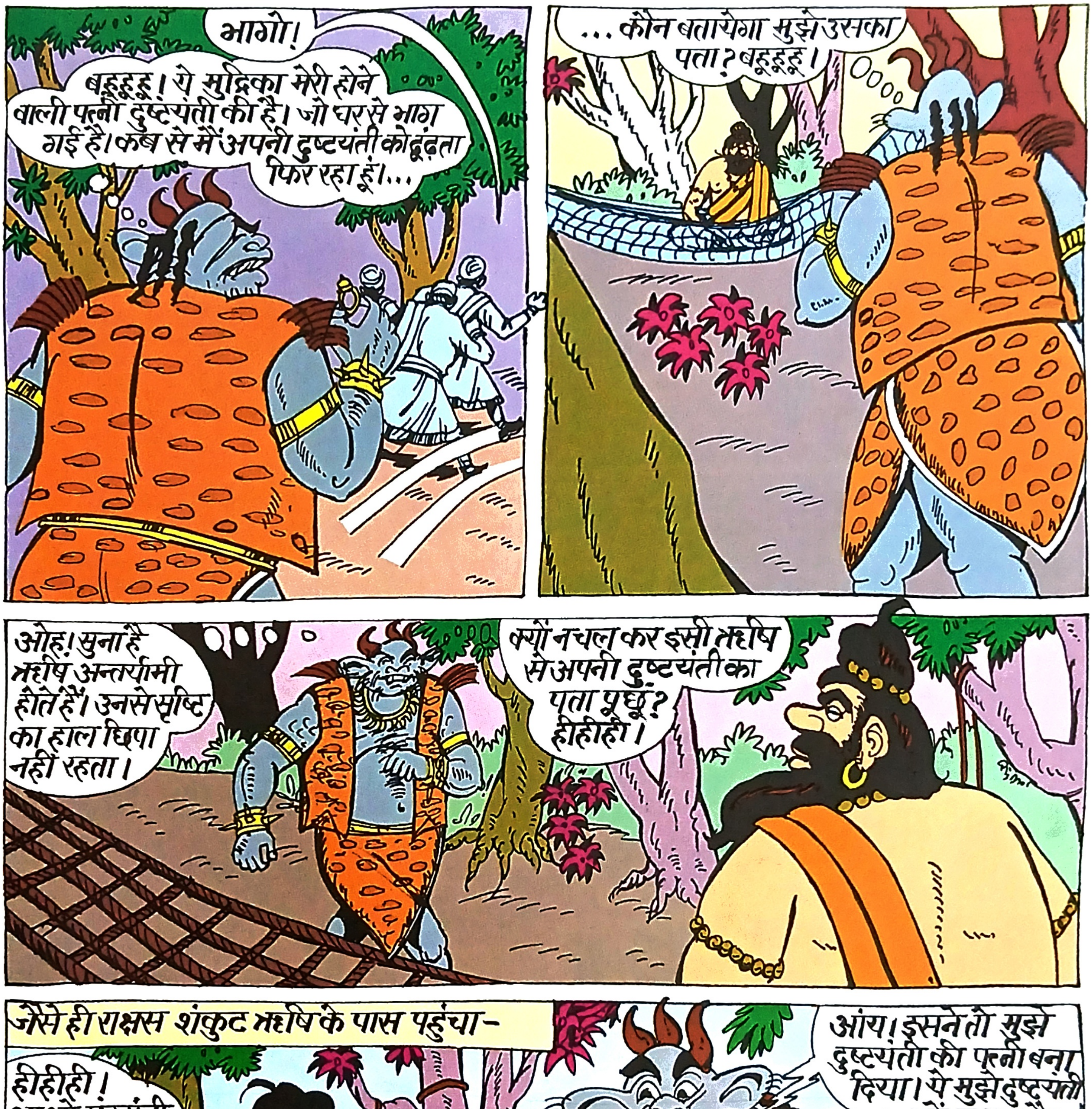
चित्रांकन: बेदी

सहयोग: गौरव, अमित, अनूप श्रीकांत, राजकुमार

लेखक: तरुण कुमार वाही! रंग संयोजन: सुनील पाण्डेय! संपादक: मनोज गुप्ता!




...तो उधर राक्षस शंकुट पत्नी के लिए--
ठहरो।
राक्षस!
राक्षस
लेकिन भागने का समय न था। क्योंकि राक्षस सिर पर आ चुका था-
तुमने इस मुद्रिका को कहीं देखा है?
न...नहीं देखा राक्षस भैया।
हमारे पिताश्री ने भी ऐसी मुद्रिका कभी नहीं देखी।
क्या?
तो फिर बताओ ये देखा है? हीहीही।
हां। ये देखा है। ये तो तीले वाली झाड़ू का तीला है। हीहीही।
ये तीला नहीं बेवकूफ, मेरा शस्त्र है, जिसे मैं इंकार में जवाब देने वालों की नाक में डाल देता हूं। हीहीही।
आऽऽछी


भागो!
बहुहुहू। ये मुद्रिका मेरी होने वाली पत्नी दुष्टयंती की है। जो घर से भाग गई है। कब से मैं अपनी दुष्टयंती को ढूंढ़ता फिर रहा हूं।...
...कौन बतायेगा मुझे उसका पता? बहुहुहू।
ओह! सुना है महर्षि अन्तर्यामी होते हैं। उनसे सृष्टि का हाल छिपा नही रहता।
क्यों न चल कर इसी महर्षि से अपनी दुष्टयंती का पता पूछूं? हीहीही।
जैसे ही राक्षस शंकुट महर्षि के पास पहुंचा-
हीहीही! आओ दुष्टयंती, शंकुट का पता पूछ रही हो? हीहीही।
आंय! इसने तो मुझे दुष्टयंती की पत्नी बना दिया। ये मुझे दुष्टयंती क्यों कह रहा है? मैं तो शंकुट हूं। बहुहुहू।


मेरा नाम ऋषि भ्रमाचार्य है। मैं हर बात को ऐसे ही घुमा-फिरा कर कहता हूं। जिसका मतलब सामने वाले को ही समझना पड़ता है। जो न समझे वो अनाड़ी है। हीहीही।
ऋषिवर। कृपया मुझे मेरे शंकुट का पता बताएं। हीहीही।
ओह! इसके हिसाब से मैं शंकुट का पता पूछ रहा हूं। जबकि मैं पूछना चाहता हूं दुष्यंती का। औंधा है ये ऋषि। हीहीही।
तेरा शंकुट उसके पास है जिसके सिर पर चोटी है। उसके नाम में रंग है।
ऋषिवर! वो स्त्री है या पुरुष?
पहनावे से पुरुष है। स्वभाव से स्त्री। हीहीही।
!!
पर वो है किधर?
जा! जिधर ये तीर इशारा करें उधर को जा। तुझे शंकुट मिल जायेगा। हीहीही।

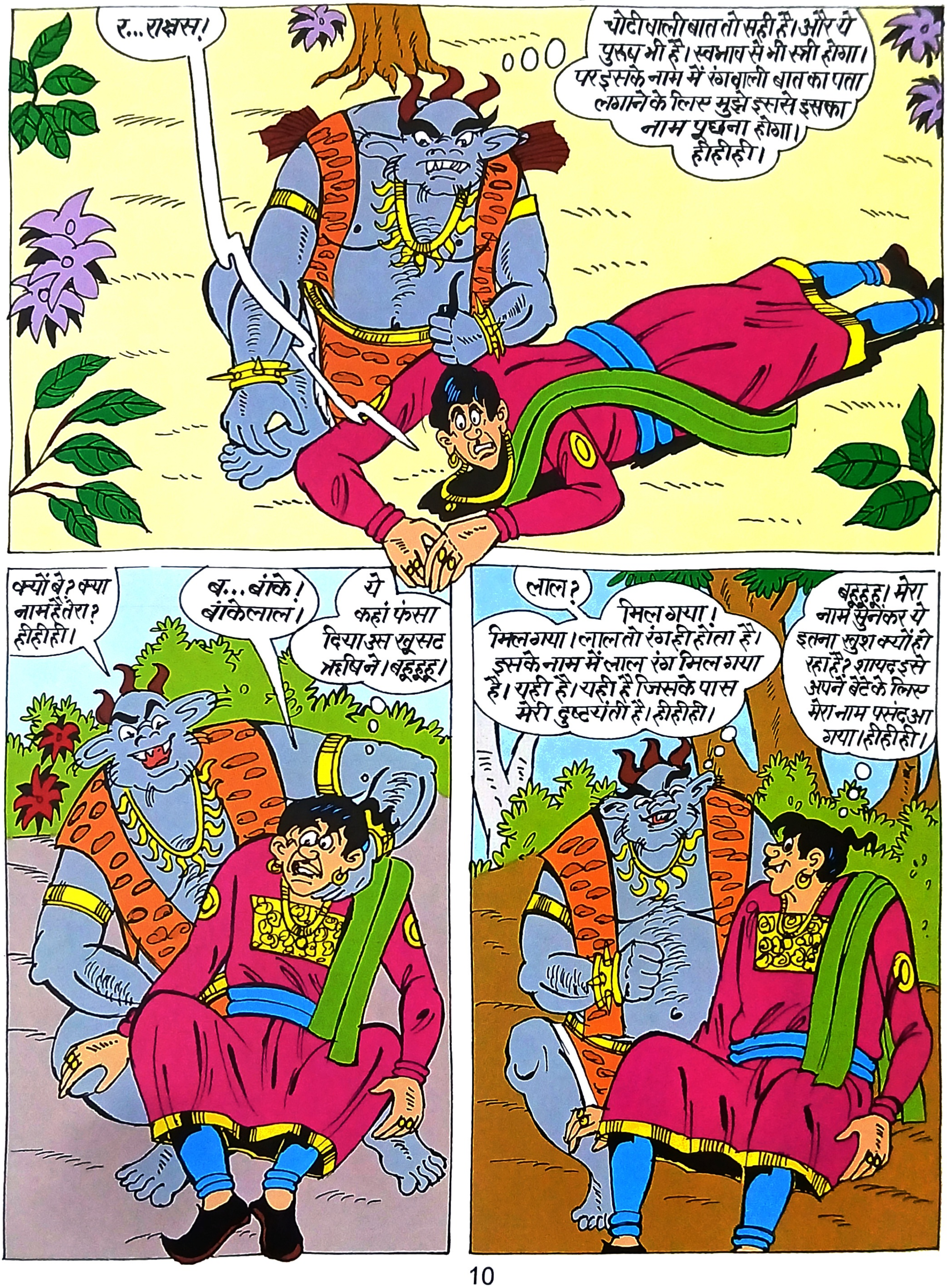

राक्षस आगे बढ़ा—
चलो! इतना तो पता चला। अब मैं ऐसे व्यक्ति की खोज शुरू कर देता हूं जिसके सिर पर चोटी हो। उसके नाम में रंग हो। जो पहनावे से पुरुष हो, स्वभाव से स्त्री हो। तीर इधर इशारा कर रहा है।
बांकेलाल भी उसी वक्त कालिया पर सवार होकर महल से रवाना हुआ।
बहुत सुन लिया महर्षि भ्रमाचार्य के विषय में।
सुना है गोल-मोल बातों में ही सही, पर बताते ठीक हैं।
उन्हीं से चल कर पूछता हूं उस डायन के विषय में जो रात्रि में निकलती है...
...और भोले-भाले नगरवासियों के जबड़े तोड़ डालती है।
कृपा कर बताएं महर्षिवर कि ऐसी डायन कौन है? और कहां पर है?
ओह! तो तू भी शंकुट को ढूंढ रहा है। हीहीही। आम का पापड़। मारे मुंह पर झापड़। तीर प्रकट हो।
!!


जा। जिधर ये तीर इशारा करें, उधर को जा। तुझे शंकुट मिल जाएगा। हीहीही।
शंकुट उसी डायन का नाम होगा।
ये तीर तो ऊपर की ओर संकेत कर रहा है।
तो क्या मुझे इस वृक्ष पर चढ़ना होगा। चढ़ना ही होगा। मजबूरी है।
क्योंकि अगर मुझे राजा बनना है तो मुझे छत्तीसगढ़ के नागरिकों का दिल जीतना ही होगा।
मैं वृक्ष पर आ गया। ओय यहां भी एक तीर धंसा है।
पर ये तो नीचे की संकेत कर रहा है।


बांके नीचे उतरा तो—
ये तीर सीधा जाने का संकेत कर रहा है।
ओह। एक और तीर। और ये गड्ढे में जाने का इशारा कर रहा है। जाना ही होगा।
आंय! तीर फिर वापस बाहर जाने को कह रहा है।
लो। मैं बाहर आ गया। अब ये तीर मुझे इधर जाने का संकेत कर रहा है। जाना ही पड़ेगा।

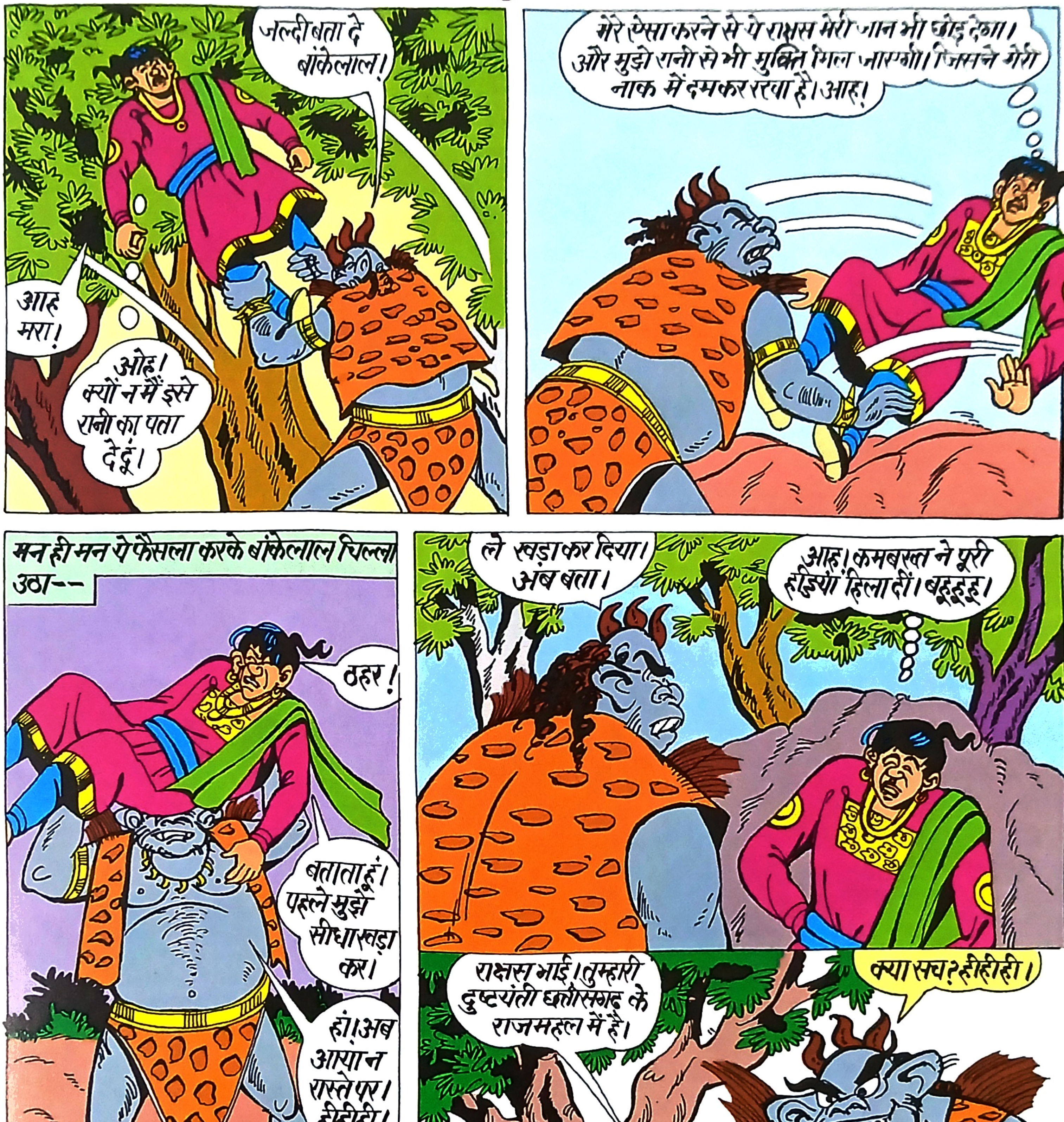

तीर वापस पेड़ पर चढ़ने का संकेत कर रहा है।
चढ़ना ही पड़ेगा। बहुहुहू। हम्फ।
हम्फ। हम्फ। गुर्र्र्र्र। तीर वापस नीचे उतरने का संकेत कर रहा है। उतरना ही पड़ेगा। हम्फ।
कांव!
आह! बचाओ। अबे तीर बचा।
आह मरा। मरना ही पड़ेगा। बहुहुहू।
धाड़
बांके के होश उड़ गए।
जल्दी ही आंखें खुलीं-
तीर फिर ऊपर चढ़ने का संकेत कर रहा है।


अबे तेरी तो। गुर्रर्र।
अबे मैं कह रहा था ऊपर देख ले। वरना बहुत पछतायेगा। हूहूहूहू हीहीही।
कड़ाक
काश, बांके एक बार और निगाहें ऊपर करके देख लेता।
क्योंकि ऊपर वाले का तीर नीचे की संकेत कर रहा था।
ओह! तीर नीचे की संकेत कर रहा है। कम्बख्त चार घण्टे से नीचे-ऊपर, दाएं-बाएं, आजू-बाजू, घुमा रहा है। पर अभी तक मुझे वो चोटी वाला मानव नहीं दिखा जिसके नाम में रंग...
...दिख गया।
तीर नीचे को इशारा कर रहा है यानी यही है वो मानव। अभी पता चल जायेगा। हीहीही।
आ गया हत्थे। अब कहां जाएगा?
धम्म
क... क... कौन है? ब... ब... बचाओ। हुण अप्पा दा की होऊं?

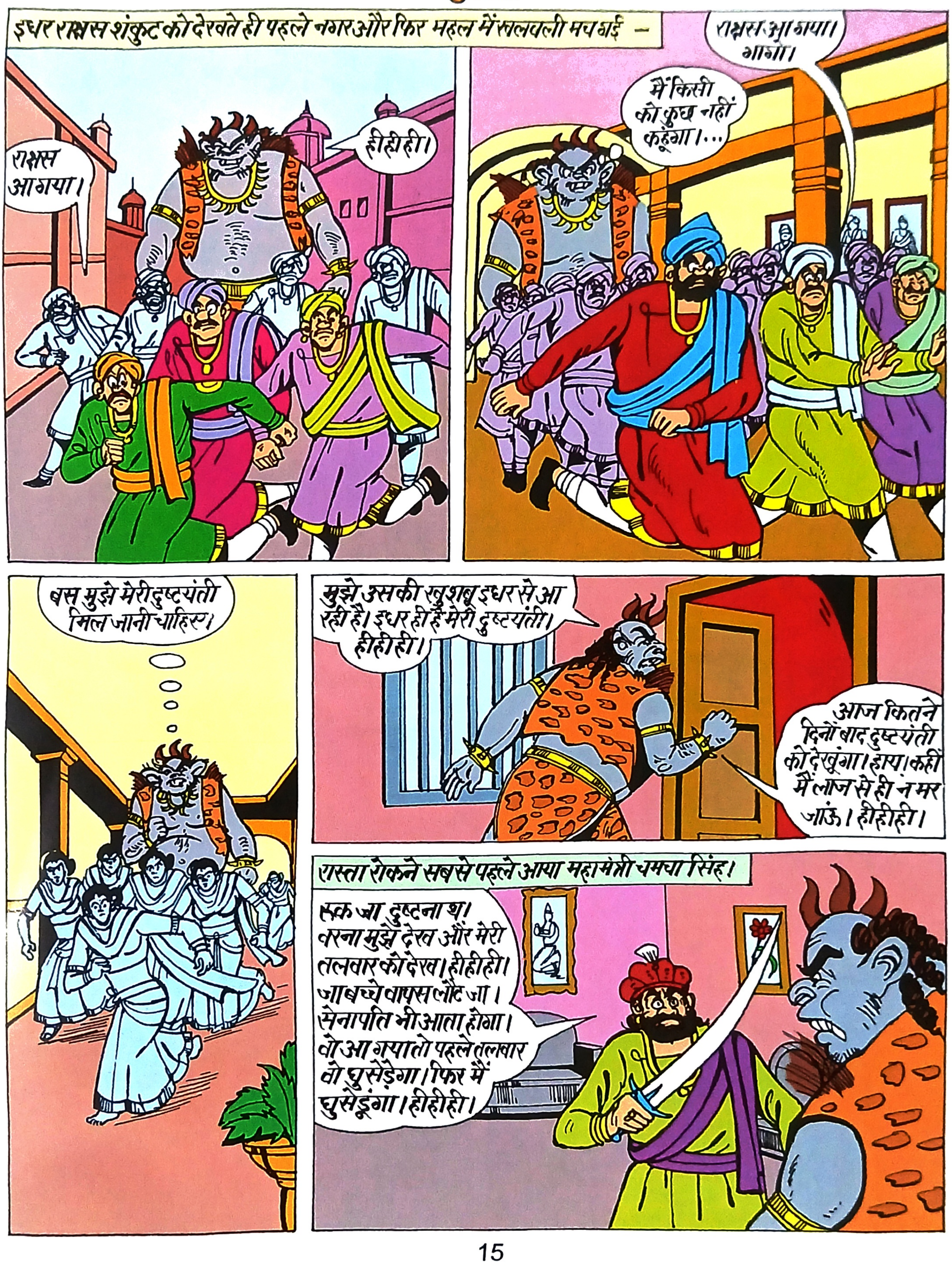

र... राक्षस!
चोटी वाली बात तो सही है। और ये पुरुष भी है। स्वभाव से भी स्त्री होगा। पर इसके नाम में रंग वाली बात का पता लगाने के लिए मुझे इससे इसका नाम पूछना होगा। हीहीही।
क्यों बे? क्या नाम है तेरा? हीहीही।
ब... बांके! बांकेलाल।
ये कहां फंसा दिया उस खुसट महर्षि ने। बहुहूह।
लाल?
मिल गया। मिल गया। लाल तो रंग ही होता है। इसके नाम में लाल रंग मिल गया है। यही है। यही है जिसके पास मेरी दुष्टयंती है। हीहीही।
बहुहूह। मेरा नाम सुनकर ये इतना खुश क्यों हो रहा है? शायद इसे अपने बेटे के लिए मेरा नाम पसंद आ गया। हीहीही।

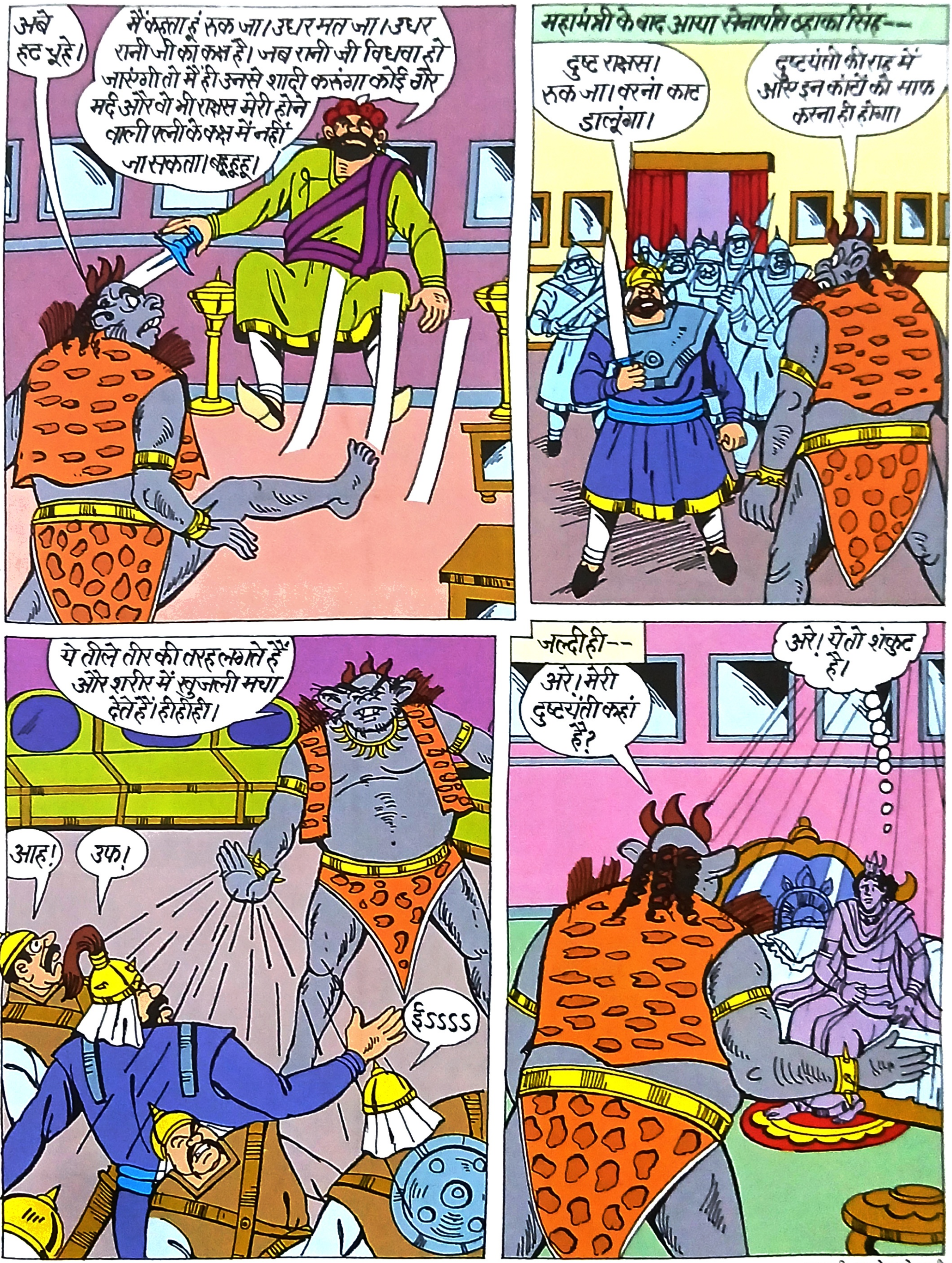

बांकेलाल। मेरा नाम शंकुट है। तूने इस मुद्रिका को जरूर कहीं देखा होगा।
बता कहां देखा है?
शंकुट। ओह तो ये ही शंकुट है पर डायन तो स्त्री होती है। और ये पुरुष है। ये डायन नहीं हो सकता। तो फिर महर्षि खूसट ने मुझे इसके पास क्यों भेज दिया? गुर्रर।
बांके। जल्दी बता वरना मैं तेरी नाक के दोनों छेदों में तीले घुसेड़ दूंगा। हीहीही।
राक्षस भैया। मैंने ये अंगूठी बिल्कुल भी नहीं देखी। हीहीही।
मुझे महर्षि भ्रमाचार्य ने झूठ थोड़े ही बताया है। उनके कहेनुसार तेरे पास ही है मेरी होने वाली पत्नी डायन दुष्टयंती।
ड...डायन दुष्टयंती? म... मेरे पास।
क्या?
तूने मेरी दुष्टयंती को दुष्टा कहा।
पर मैं... मैं तो खुद भी दुष्टा डायन की खोज कर रहा हूं।


कोई उसे दुष्टा कहे ये मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। गुर्रर्र।
आह!
पटाक
अब जल्दी बता कहां छिपा रखा है तूने मेरी दुष्टयंती को?
म... मेरे पास तेरी दुष्टयंती नहीं है राक्षस भैया! बहूहूहू।
बेटे बांके! आज आ गई तेरी शामत।
जब तक तू मुझे मेरी दुष्टयंती के पास लेकर नहीं जाएगा... तब तक मैं तुझे ऐसे ही पटकता रहूंगा। फिर बाद में तेरी नाक में तीले घुसेडूंगा। हीहीही गुर्रर्र।
धाड़
आह! मर गया।
बोल! कहां है मेरी दुष्टयंती?
आंय! इतनी जोर की पटकने पर भी मैं नहीं मरा। बांकेलाल! जल्दी कुछ कर वरना आज तेरी अर्थी उठाने वाला भी यहां कोई न होगा। बहूहूहू।
धाम


जल्दी बता दे बांकेलाल।
आह मरा।
ओह! क्यों न मैं इसे रानी का पता दे दूं।
मेरे ऐसा करने से ये राक्षस मेरी जान भी छोड़ देगा। और मुझे रानी से भी मुक्ति मिल जाएगी। जिसने मेरी नाक में दम कर रखा है। आह!
मन ही मन ये फैसला करके बांकेलाल चिल्ला उठा--
ठहर!
बताता हूं। पहले मुझे सीधा खड़ा कर।
हां। अब आया न रास्ते पर। हीहीही।
ले खड़ा कर दिया। अब बता।
आह। कमबख्त ने पूरी हड्डियां हिला दीं। बहूहूहू।
राक्षस भाई। तुम्हारी दुष्टयंती छत्तीसगढ़ के राजमहल में है।
क्या सच? हीहीही।


तो मैं चला अपनी दुष्टयन्ती के पास। उसके पास भी मेरे जैसी मुद्रिका है। वो मुझे देखते ही पहचान जाएगी।
जान बची।
लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आई कि राक्षस द्वारा मेरा सिर पत्थर, पेड़ और जमीन पर पटकने के बाद भी मेरा सिर फटा क्यों नहीं?
बेटा बांकेलाल! शुक्र मना आज तो बच गया तू।
अब मुझे महल चलकर छिपकर सारा नजारा देखना चाहिए। हीहीही।
चल कलिया!
तिगड़ तिगड़


इधर राक्षस शंकुट को देखते ही पहले नगर और फिर महल में खलबली मच गई –
राक्षस आ गया।
हीहीही।
राक्षस आ गया। भागो।
मैं किसी को कुछ नहीं कहूंगा।...
बस मुझे मेरी दुष्टयंती मिल जानी चाहिए।
मुझे उसकी खुशबू इधर से आ रही है। इधर ही है मेरी दुष्टयंती। हीहीही।
आज कितने दिनों बाद दुष्टयंती को देखूंगा। हाय। कहीं मैं लाज से ही न मर जाऊं। हीहीही।
रास्ता रोकने सबसे पहले आया महामंत्री चमचा सिंह।
रुक जा दुष्टनाश। वरना मुझे देख और मेरी तलवार को देख। हीहीही। जा बच्चे वापस लौट जा। सेनापति भी आता होगा। वो आ गया तो पहले तलवार वो घुसेड़ेगा। फिर मैं घुसेड़ूंगा। हीहीही।


अबे हट चूहे।
मैं कहता हूं रुक जा। उधर मत जा। उधर रानी जी का कक्ष है। जब रानी जी विधवा हो जाएंगी तो मैं ही उनसे शादी करूंगा कोई गैर मर्द और वो भी राक्षस मेरी होने वाली पत्नी के कक्ष में नहीं जा सकता। ऊहूहू।
महामंत्री के बाद आया सेनापति धमाका सिंह---
दुष्ट राक्षस। रुक जा। वरना काट डालूंगा।
दुष्टयंती की राह में आए इन कांटों को साफ करना ही होगा।
ये तीले तीर की तरह लगते हैं और शरीर में खुजली मचा देते हैं। हीहीही।
आह!
उफ!
ईSSSS
जल्दी ही--
अरे। मेरी दुष्टयंती कहां है?
अरे! ये तो शंकुट है।

कहानी 19 पेज से जारी

राज कामिक्स की कार्टून सीरीज के आकर्षक कॉमिक



- भारतीय संस्कृति की ज्ञान गंगा में नहाएं
- पौराणिक सम्पदा को अपने घर में सजाएं
- नई पीढ़ी के स्वर्णिम निर्माण के लिए पढ़ें और पढ़ाएं

राज चित्रकथा

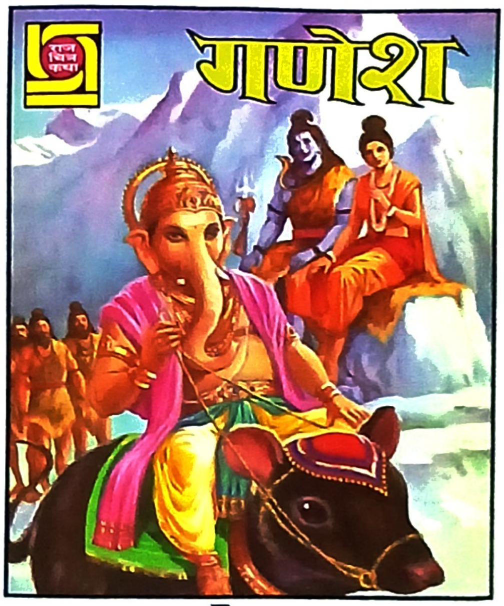
की गौरवशाली सोलह चित्रकथाएं

- राम
- पार्वती
- वासुदेव कृष्ण
- श्रीकृष्ण सत्यभामा
- शत्रुघ्न
- अर्जुन का बनवास
- सूर्यपुत्र कर्ण
- सती
- शिवपुत्र कार्तिकेय
- लक्ष्मण
- द्वारिकाधीश कृष्ण
- बलराम
- गंगापुत्र भीष्म
- भीम
- नीलकंठ शिव
- पवनपुत्र हनुमान

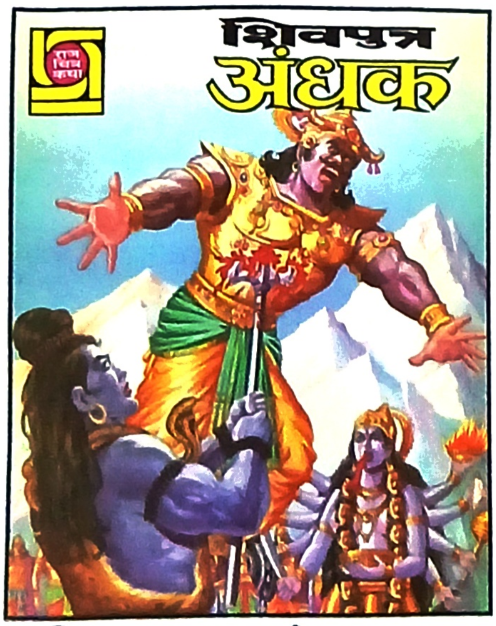
इनकी अपार सफलता के बाद अब प्रस्तुत हैं चार नई चित्रकथाएं

प्रत्येक का मूल्य 15/-

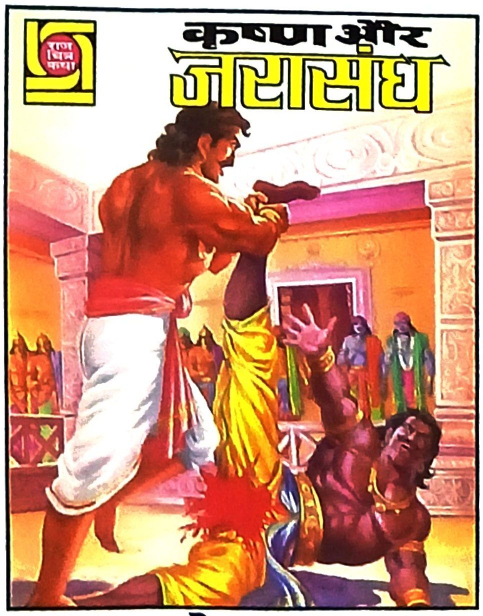
सभी चित्रकथाएं आपके शहर के समस्त बुक स्टालों पर उपलब्ध हैं। न मिलने पर कोई भी चार चित्रकथाएं मंगाने के लिए 60/- का मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें। चारों चित्रकथाएं आपको रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा भेज दी जाएंगी। मनीआर्डर के निचले हिस्से पर कॉमिकों के नाम लिखकर भेजें।



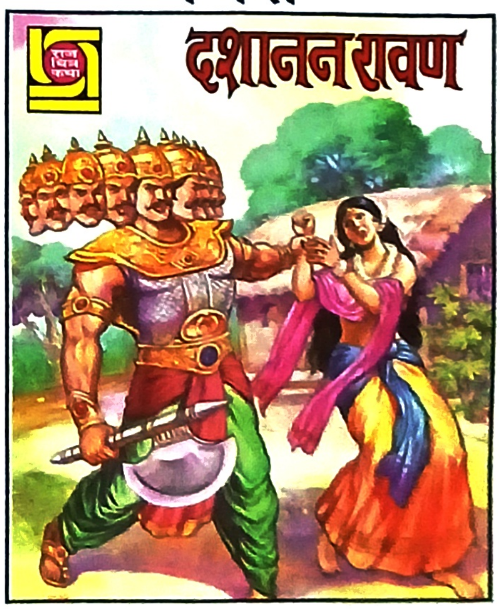
गणेश



शिवपुत्र अंधक



कृष्ण और जरासंध



दशानन रावण


दुष्टयंती के शरीर की गंध तो तुझमें से ही आ रही है।
तो ये मुझे ढूंढ़ता हुआ यहां तक आ पहुंचा बहूहूहू।
तू ही मेरी दुष्टयंती है पर तू इतनी खूबसूरत कैसे हो गई? समझा। हीहीही। मानवों को धोखा देने के लिए तू इस रानी के शरीर में रहने आ गई।
पर अब तू ये शरीर छोड़कर जल्दी से वापस अपने शरीर में लौट जा। मुझे बता कहां रखा है तेरा शरीर ताकि मैं उसे यहीं पर ले आऊं। अब मैं तुझे अपने साथ लेकर जाऊंगा। हीहीही।
नहीं! मेरे मातापिता ने मेरा विवाह इससे तय कर दिया है। पर इसे नींद में पीटने की आदत है। जो भी इसके आसपास होता है ये नींद में उसे पीटने लगता है। अबतक ये अपने माता-पिता, भाई-बहन, सब को पीट चुका है। अगर मैं इसकी पत्नी बन गई तो सारी उम्र रात में पिटती रहूंगी। इसलिए ही तो मैं घर छोड़कर भागी हूं। बहूहूहू।

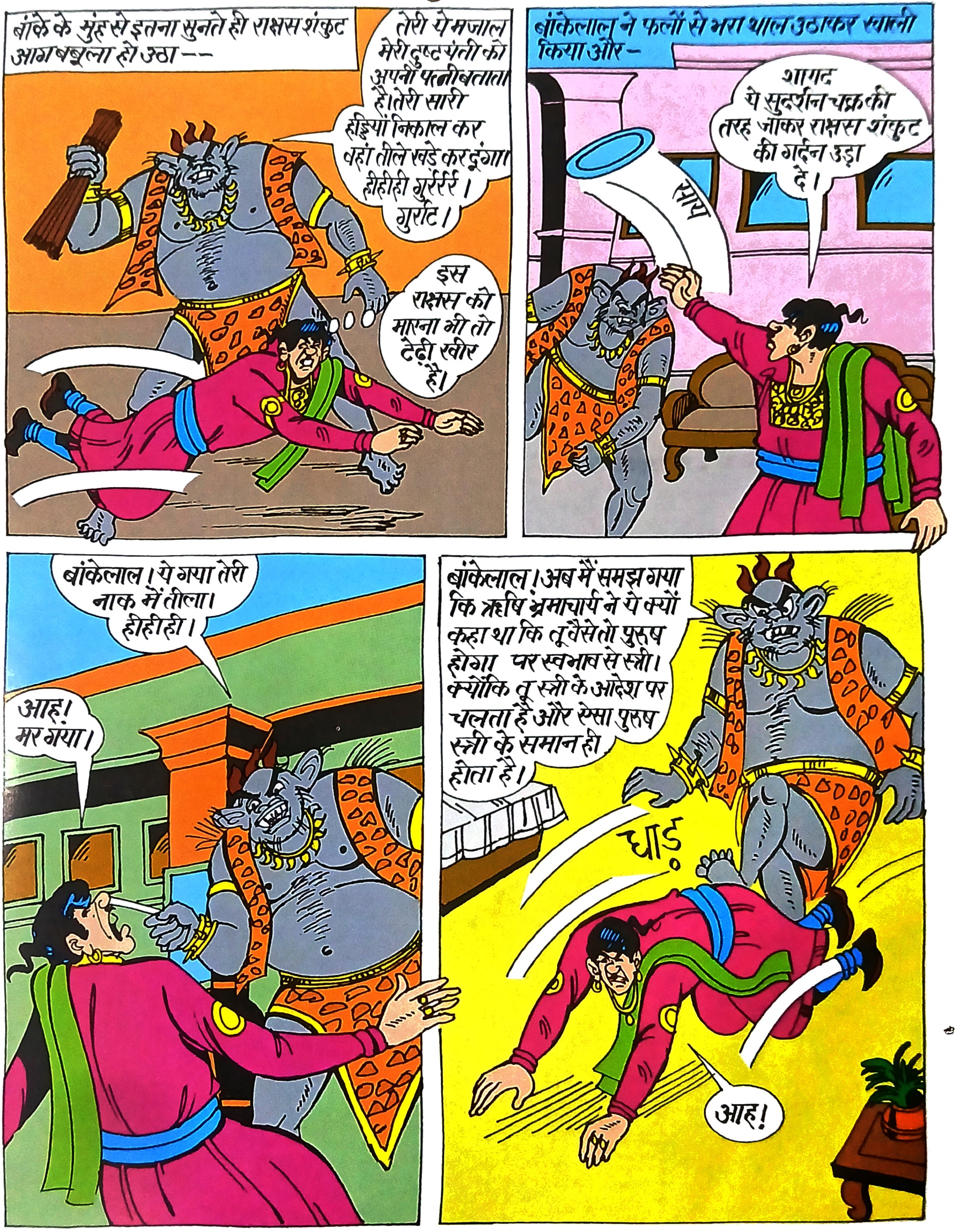

बांकेलाल भी तब तक वहां पहुंच चुका था और छिपकर वह नजारा देख रहा था।
हीहीही। अब आयेगा मजा जब ये राक्षस रानी की चुटिया पकड़कर उसे घसीट कर ले जायेगा। पर रानी में से इसे दुष्टयंती की खुशबू कैसे आ रही है? कहीं ये सचमुच ही तो डायन नहीं? बहुहुहू।
चल दुष्टयंती! अब देर मत कर।
हां हां! देर मत कर हीहीही।
नहीं छोड़ मुझे दुष्ट! मैं रानी रूपकंवर हूं।
देख! बनाइयो किसी और को। हीहीही। मैं जिसकी खुशबू एक बार सूंघ लेता हूं... उसे सात जन्मों में भी सूंघ कर पहचान लेता हूं। तू तो फिर भी मेरी होने वाली पत्नी है। चल! मजाक मत कर। लोग तमाशा देखेंगे तो क्या तुझे अच्छा लगेगा? चल जल्दी चल।
नहीं! मैं नहीं जाऊंगी।
सेनापति! महामंत्री! कहां मर गए सबके सब।
आह! तो तू ऐसे नहीं जायेगी। तो फिर ठीक है।


मैं तेरी आत्मा तीले पर अटका कर बाहर निकाल लेता हूं। तब तो तुझे बताना ही पड़ेगा की तेरा शरीर कहां पर रखा है ताकि मैं तेरी आत्मा को उसमें डाल दूं।
वाह! मजा आ गया हीहीही।
(अबे तेरी तो! तू यहां खड़ा है पतले पतीले। और वहां द्रौपदी की लाज खतरे में है।) गुर्ररर।
गुर्रर
अरे बाप रे! ये तो दहाड़ू की दहाड़ है। ये कमबख्त यहां कब से खड़ा है। हीहीही। बहुहूहू। म... मैं तो रानी जी को बचाने जा ही रहा था। हीहीही।
दहाड़ (मुझे सब पता है।) हीहीही।
दहाड़ऽऽ (ये खिड़की पर छिपकर खड़ा तमाशा देख रहा था। मैं इसे घसीट लाया, अब अगर कोई पहले मरेगा तो ये ही क्योंकि पति का पहला कर्त्तव्य पत्नी की रक्षा करना होता है।) हीहीही।
अरे। ये तो वही है। जिसने मुझे मेरी दुष्टयंती का पता बताया था। हीहीही।


ओह! शायद बांकेलाल को मेरी असलियत पता लग गई है।
पर अभी भी बाजी मेरे ही हाथों में है?
चीख पड़ी रानी।
स्वामी! मुझे इस दुष्ट राक्षस से बचाओ।
चल बे जा! बच्चा! ये तेरी बीबी है। गुर्रर्र!
नहीं! ये रानी नहीं ये चुड़ैल है डायन है।
यही है वो डायन जो रात्रि में लोगों के जबड़े तोड़ती है।
हीहीही! बांकेलाल! तूने ठीक पहचाना। मैं ही वो डायन हूं।


लेकिन अगर इस वक्त तूने मुझे न बचाया तो तू भी नहीं बचेगा। क्योंकि राक्षस शंकुट मेरी आत्मा तोते पर खींच रहा है। अगर वो कामयाब हो गया तो तू भी मारा जाएगा क्योंकि तेरी आत्मा मेरी मुट्ठी में है। हीहीही।। ये देख।
!!
त...तो फिर मैं जिन्दा कैसे हूं?
ठीक वैसे ही जैसे तोता मैना की कहानी में राक्षस की जान तोते में होती है पर वो राक्षस भी जिन्दा होता है। हीहीही।
अगर तुझे यकीन नहीं आता तो ये देख। मैं अपने हाथ पर चूंटी मारूंगी तो दर्द तुझे भी होगा। हीहीही।
आह!
मैं अपना माथा फोड़ूंगी तो तेरा भी फूटेगा। हीहीही।
आह!
धाड़


तू भले ही महल की छत से भी कूद कर देख ले। परन्तु तब तक मरेगा नहीं जब तक तेरी जान मेरी मुट्ठी में है। अगर तूने इस दुष्ट से मुझे न बचाया तो मेरे साथ तू भी मरेगा। क्योंकि तेरी जान को जब तक मैं अपनी मर्जी से आजाद नहीं कर दूंगी तब तक वो तेरे शरीर में नहीं जा सकती। हीहीही।
ये दुष्टा बिल्कुल ठीक कह रही है। अब मेरी समझ में आ गया कि मैं शंकुट द्वारा बारबार पटके जाने पर भी क्यों नहीं मरा? बहूहूहू।
हुण अणां दा की होंऊ?
रानी को इस दुष्ट शंकुट के हाथों बचाना ही होगा।
बांकेलाल जल्दी कर वरना स्त्रियों का अपने पतियों पर से विश्वास उठ जाएगा। गुर्रर्रर।
बांकेलाल ने छड़ी के हत्थे में राक्षस शंकुट का हाथ फंसाया और अपनी ओर खींच लिया।
दुष्टनाथ। छोड़ दे उसका हाथ। वो मेरी पत्नी है।


बांके के मुंह से इतना सुनते ही राक्षस शंकुट आग बबूला हो उठा --
तेरी ये मजाल मेरी दुष्टयंती को अपनी पत्नी बताता है। तेरी सारी हड्डियां निकाल कर वहां तीले खड़े कर दूंगा। हीहीही गुर्रर्रर्र। गुर्राट।
इस राक्षस को मारना भी तो टेढ़ी खीर है।
बांकेलाल ने फलों से भरा थाल उठाकर खाली किया और -
शायद ये सुदर्शन चक्र की तरह जाकर राक्षस शंकुट की गर्दन उड़ा दे।
सांय
बांकेलाल। ये गया तेरी नाक में तीला। हीहीही।
आह! मर गया।
बांकेलाल। अब मैं समझ गया कि ऋषि भ्रमाचार्य ने ये क्यों कहा था कि तू वैसे तो पुरुष होगा पर स्वभाव से स्त्री। क्योंकि तू स्त्री के आदेश पर चलता है और ऐसा पुरुष स्त्री के समान ही होता है।
धाड़
आह!



शैतान शंकुट! अगर तू मेरी जगह पर होता तो तू भी ये आदेश मानने पर विवश होता।
ओफ्फ!
बांकेलाल! इसकी मृत्यु इसकी नाभि में झाड़ू का तीला मारने से होगी।
दुष्टयंती! बेवफा गद्दार! तूने मेरी मृत्यु का रहस्य इस मानव को बता दिया।
अब मैं तुझे भी नहीं छोड़ूंगा। मैं तेरी आत्मा को ले जाकर पाताल में गाड़ दूंगा।
बांकेलाल बचाओ। ये मेरी तरफ आ रहा है।
मैं इसे आने दूंगा तो ये आयेगा ना। हीहीही।
आह! कमबख्त ये नामुराद कैसी छड़ी है। इसमें कुछ भी फंस जाए गिरा कर ही दम लेती है पर गिरने से पहले तीला तोड़ दूं।


गर्रर्रर्र। (बांकेलाल। ये लो मैं पूरी झाड़ू ले आया। इसमें से तीला निकाल लो। जल्दी करो वरना स्त्रियां अपनी मांग में सिंदूर भरना बंद कर देंगी) दहाड़ऽऽ हीहीही।
वाह! झाड़ू।
बांके ने फुर्ती से झाड़ू में से एक तीला निकाला---
धन्यवाद दहाड़ू भाई!
गुर्रर्र (चमचागिरी करने के लिए पूरी उम्र पड़ी है। पहले जो काम करना है वो निबटा।) हीहीही गुर्रर्रर्र।
तीले को त्रिशूल की तरह उठाकर बांकेलाल ने किया ताण्डव--
जय भोले शंकर।
और-
आह!


नाभि में तीला लगते ही राक्षस शंकुट के प्राण पखेरू उड़ गए -
!!
हुण अप्पा दा कुछ नहीं हो सकता। चंगा भई! दुष्टयंती! तू सुहागन बनने से पहले ही विधवा हो गई।
हीहीही। इसकी मृत्यु इसे छत्तीसगढ़ खींच लाई थी।
महाराज ने राक्षस को तीला मारकर मार दिया।
सिर्फ तीला मारकर। मुझे तिनका नहीं मिला वरना मैं तो तिनका मार कर ही मार देता। वही ढूंढने में देर हो गई। हीहीही।
वाह। बांकेलाल जी! आपके रूप में छत्तीसगढ़ को सचमुच एक शक्तिशाली उत्तराधिकारी मिल गया है।
हां। उत्तराधिकारी पर राजा तो अभी तक भी नहीं मिला।


और बहुहुहु। अब तो ये भी साबित हो गया कि रानी ही डायन रानी दुष्टयंती है।
तो क्या अब मुझे डायन के साथ रहना होगा। बहुहुहु।
मैं तो आज रात ही खिसक लूंगा...
...विशालगढ़ की ओर।
लेकिन--
हीहीही। यहां से भागना आसान नहीं है स्वामी। अगर तुमने भागने की चेष्टा की तो मैं तुम्हारी आत्मा कुत्ते को खिला दूंगी। हीहीही।
बहुहुहु। हुण की होगा पाप्पे। इससे अच्छा तो मुच्छड़ की पप्पी ही थी।
चलिए स्वामी। मेरी टांगें दबाने का वक्त हो गया।
बहुहुहु
हुण की होगा ये तो अगले अंकों में पता लगेगा। तब तक के लिए विदा।

समाप्त


आसमान से गिरा खजूर पर लटका। राजा तो बना नहीं अपनी ही पत्नी का सेवक बन गया।
हीहीही! बांकेलाल जल्दी पैर दबा फिर तुझे मेरे सिर की मालिश भी करनी है। स्नान के लिए पानी भी गर्म करना है, कपड़े भी धोने हैं, जूतियां भी चमकानी हैं।
डायन रानी
DOGA YEAR
राज कॉमिक्स में हास्य सम्राट बांकेलाल का हास्य कॉमिक



वाह! गुरु! आज मुम्बई के हरेक गैस सिलेंडर में से आइसक्रीम निकल रही है।
आज हम सब खाना नहीं आइसक्रीम खाएंगे।
शंकालू! आज तो सभी मुम्बईवासी आइसक्रीम खा लेंगे लेकिन ये सोचो गैस नहीं होगी तो कल के बाद खाना कैसे पकेगा?
इस समस्या का गमराज ने क्या हल निकाला जानने के लिए पढ़ें:
DOGA YEAR
मूल्य: 10/-
आई लव माई इंडिया
राज कॉमिक्स में ट्रेजडी किंग गमराज का हास्य कॉमिक

RAJ COMICS राज कॉमिक्स BY MANOJ GUPTA

बांकेलाल

हास्य सम्राट बांकेलाल!
उसका डेढ़ पसली बदन, सिर पर लगा बोदी वाला एंटीना, और सामने के निकले दो दांत ही उसके षड्यंत्रकारी दिमाग में चल रही खुराफातों को उजागर कर देते हैं।
सदियों से ही उसका बस एक ही सपना है, किसी तरह विशालगढ़ के महाराज विक्रम सिंह को रास्ते से हटाकर खुद राजा बनना। मगर, एक श्राप के कारण, वो जिसका भी बुरा करने निकलता है, उसका भला ही हो जाता है। नित नई योजना बनाता बांकेलाल न चाह कर भी हर मुश्किल हल करके बन जाता है सबका प्यारा बांकेलाल।



प्रिय दोस्तों,
1986 में राज कॉमिक्स की स्थापना के बाद से आज तक आप सभी का जो अटूट प्रेम मिला, साथ मिला, उसके लिए हम हृदय से आपके सदा आभारी हैं।
आपका,
मनोज गुप्ता



COMICS
ISBN 978-93-324-0472-4
9 789332 404724
GENL-1066
₹100.00
www.rajcomics.net